विषय : HIN–527 हिंदी क्षेत्रों में अध्ययन यात्रा

नाम : साहीश्री नाईक

कक्षा : एम. ए. प्रथम वर्ष

अनुक्रमांक: 23P0140021

PR No: 202009090

<u>शणै गोंयबाब भाषा और साहित्य महाशाला</u>

<u>हिंदी अध्ययन शाखा</u>

<u>गोवा विश्वविद्यालय</u>

<u>अप्रैल २०२४</u>

15/20

3/05/24

<u>परीक्षक :</u>

GOA UNIVERSITY
TALEIGAO PLATEAU GOA

अनुक्रमणिका

क्रमांक	विषय	पृष्ट संख्या
1	प्रस्तावना	2 - 3
2	अक्षरधाम मंदिर	4
3	इंडिया गेट	5
4	रविन्द्र भवन	6 - 7
5	लोटस माहल	8
6	हुमायूँ का मकबरा	9
7	राष्ट्रपति भवन	10
8	दिल्ली विश्वविद्यालय	11 - 12
9	हिन्दू कॉलेज	12 - 13
10	जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय	14 - 18
11	कुतुब मीनार	19 - 21
12	ताजमहल	22 - 23
13	मथुरा	24 - 25
14	वृंदावन	25 - 26
15	अग्रसेन की बावली	26 - 27
16	राजघाट	28 - 30
17	जामा मस्जिद	30 - 31
18	लाल किला	32 - 33
19	सरोजनी नगर मार्केट	33 - 35
20	निष्कर्ष	36

प्रस्तावना

हम सभी जानते ही हैं कि शैक्षणिक यात्रा कितनी उपयोगी होती है। यह छात्रों को विभिन्न स्थानों को देखने में समर्थ बनाती है। जब हम विभिन्न स्थानों को देखते हैं तब हम बहुत कुछ सीखते है।शैक्षणिक यात्रा हमारे ज्ञान को बढ़ाती है तथा हमारे दृष्टिकोण को उदार बनाती है। शैक्षिक भ्रमण के माध्यम से छात्रों में एक अनुभूति जागृत होती है जिससे हमें भारत की विभिन्नताओं जैसे इतिहास, विज्ञान शिष्टाचार और प्रकृति को व्यक्तिगत रूप से जान सकते है। छात्रों में समूह में रहने की प्रवृति तथा आत्मविश्वास भी पढ़ता है। भ्रमण से जो हम सीखते हैं, उसे पुस्तकों से सीखना कठिन होता है, जो हम सिर्फ पढ़ते है पर जब हम प्रत्यक्ष रूप से देखते हैं तब हमें अच्छे से ध्यान में रहता है। भ्रमण संसार के व्यवहारिक ज्ञान को प्राप्त करने का सुनहरा अवसर प्रदान करता है। भ्रमण के दौरान तरह-तरह के व्यक्तियों से हमारा संपर्क होता है। यदी हम चौकन्नी निगाह रखकर भ्रमण करे और अपने दिल और दिमाग के खिड़की और दरवाजें सभी खुले रखें तो हमें भ्रमण से संसार के व्यक्तियों और घटनाओं का इतना व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त होता है जो किसी पुस्तक में नहीं मिलता। यह मनोरंजन के माध्यम से सीखना शिक्षा का सबसे अच्छा माध्यम हैं।

हमारे विश्वविद्यालय में हमारे पाठ्यक्रम के अनुसार दो पेपर लगे थे । भ्रमण और सरवेक्षण जिसमे से हमे किसी एक पेपर को चुनना था, तो हमारे कक्षा के कुछ छात्रों ने सरवेक्षण पेपर चुना और ज्यादातर छात्रों ने भ्रमण पेपर का चुनाव किया। हम एम.ए. प्रथम वर्ष के छात्रों के लिए, हमारे विश्वाविद्यालय ने नई दिल्ली के लिए एक शेक्षिक भ्रमण की आयोजन व्यवस्था की,जो कि एक ऐतिहासिक स्थान है। हम 13 फरवरी 2024 को लगभग 10 दिनों के लिए जाने वाले थे, पर कुछ आपसी कारणों के लिए इसे स्थगित करना पड़ा और फिर से यात्रा के लिए किसी दुसरी तारीख को ट्रेन के हिसाब से तय करना पड़ा। हमारे प्राध्यापक कुछ पाच बच्चों को ट्रेन की टिकट की व्यवस्था के लिए अपने साथ लेकर गए,जिने कुछ जानकारी प्राप्त थी कि कैसे टिकट को बुॅक करते है और जिनोनें इससे पहले ट्रेन में सफर किया हुआ था। तो दूसरी बार 18 मार्च 2024 को जाने का तय किया और सभी छात्रों से पूछकर उनकी हा होने के बाद उसी दिन जाने का तय किया। हमलोगों ने यात्रा के लिए कुछ तैयारियाँ की। यात्रा में हमें जिन महत्वपूर्ण चिजों की आवश्यकता थी उनकी सूची बनाकर हमारे प्राध्यापक ने हमें दि । यात्रा के

लिए हमें सरकार से कुछ रूपए मिले थे,लेकिन वे हमारे खर्च के लिए पर्याप्त नहीं थे इसलिए हम विधार्थियों से यात्रा के लिए कुछ रुपए लिए गए । हम कुल 26 छात्र और दो अध्यापक लगभग एक सप्ताह के लिए दिनाक 18-25 मार्च 2024 को शैक्षणिक भ्रमण हेतु दिल्ली दर्शन के लिए गए।

18 तारिक, श्याम को 3:45 को हमें गोवा एक्सप्रेस ट्रेन थी,पर वह ट्रेन मडगाव स्टेशन पर 4:45 को पहुंची। हमे गोवा से दिल्ली पहुंचने के लिए दो दिन लगे। २० तारिख को सुबह हम दिल्ली मेट्रो स्टेशन पहुंचे। हाटेल बुँक न होने के कारण हमे मेट्रो स्टेशन पर काफी वक्त बिताना पडा। उसके बाद हाॅटेल का इतंजाम होने के बाद हम मेट्रो स्टेशन से आँटो लिए हाॅटेल गए। कुछ समय आराम करने के बाद तैयार होकर बाहर निकल गए।

हम दिल्ली में 6 दिन तक रहे । हम लोगों ने स्वामिनारायण अक्षरधाम मंदिर,इंडिया गेट,रविद्र भवन,लोटस महाल,हुमायूँ का मकबरा,राष्ट्रपति भवन,बीरला मंदिर,दिल्ली विश्वाविद्यालय,हिंन्दू कालेज,जवाहरलाल नेहरू विश्वाविद्यालय, कूतूब मिनार,ताज़महल,मथुरा, वृंदावन,उग्रसेन की बावली, राजघाट,जामा मस्जिद,लाल किला,सरोजीनी मार्केट आदि स्थानो का दर्शन करने के बाद 25 तारीख को सुबह 3:30 बजे होटल से रेल्वे स्टेशन निकले वापस गोवा आने के लिए। दिल्ली से तिरुवनंतपुरम सेंट्रल ट्रेन से हम गोवा के लिए वापस लौटे। दिल्ली से गोवा पहुंचने के लिए हमे एक दिन लगा,26 तारीख को सुबह हम सब सही सलामत गोवा पहुंचे। जाते समय हमें दो दिन लगे पर वापस 1 दिन में लौटे। सभी के चहरे पर एक अलग ही मुस्कान थी आखिरकार हम अपने गोवा में जो पहुंचे। स्टेशन से सभी अपने घर निकले। यह हमारे लिए एक यादगार सफर रहा,जो सफर हमनें अपने सहपाठियों तथा प्राध्यापक/ प्राध्यापिका के साथ किया। इस यात्रा के दौरान हम बहुत कुछ सिखे, जैसे एक अंजान बडे शहर में यात्रा कैसी करनी है, सभी को एक साथ कैसे रहना है आदि सभी बातें हम इस यात्रा के दौरान सिखे।

अक्षरधाम मंदिर

20 तारीख को हम अक्षरधाम गए जो भारत में सबसे लोकप्रिय हिन्दू मंदिरों में से एक है। स्वामीनारायण अक्षरधाम को ही अक्षरधाम मंदिर के नाम से जाना जाता है। यह मंदिर 141 फीट ऊँचा, 316 फीट चौड़ा और 356 फीट लंबा खूबसूरती से बना है। मंदिर की आकर्षक वास्तुकला में 9 गुंबदों और 234 नक्काशीदार स्तंभों के साथ आचार्यों,स्वामियों और भक्तों की 20,000 से अधिक मूर्तियां है। यही वजह है कि इसको गिनीज ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दुनिया के सबसे बड़े हिंदू मंदिर परिसर के रुप में दर्जा दिया गया है। यह मंदिर 6 नवंबर 2005 को खोला गया था,यह मंरिर एचएच योगीजी महाराज की समृद्धि में बनाया गया है। हम मंट्रो सेवा से ही अक्षरधाम मंदिर गए थे। वहा के कलाकारों की कलाकृर्ती इतनी अछी है कि वहा की बारीकी से की हुई कलाकृतियों को देख ऐसा लगता है कि कितने महान लोग होंगे वे जिन्होने इतनी बारीकियों से सुंदर-सुंदर मुर्तिया तथा नक्षीककार्य किया है। यहा जाकर हमे बहुत प्रसंनता प्राप्त हुई।

इंडिया गेट

अक्षरधाम मंदिर का दर्शन करने के बाद हम हॉटेल में गए और खाना खाकर आराम करके दूसरे दिन सुबह 21 तारिक को इंडिया गेट गए, जिसे पहले अखिल भारतीय युद्ध स्मृति के नाम से जाना जाता था। इंडिया गेट को हमने सिर्फ मोबाईल या फिर टी.वि. पर देखा था पर तब पहली बार स्वय सामने आँखे बर कर देखा । इंडिया गेट की नींव 1921 में ड्यूक ऑफ़ कनाॅट ने रखी थी और इसे कुछ साल बाद तत्कालीन वायसराय लॉर्ड,इरविन ने राष्ट्र को समर्पित किया था। उसे 80,000 से अधिक भारतीय सैनिकों की याद में निर्मित किया गया है जिन्होंने प्रथम विश्वयुद्ध में वीरगति पाई थी। इंडिया गेट दिल्ली का ही नहीं बल्कि भारत का महत्वपूर्ण स्मारक है। यह स्मारक 42 मीटर ऊंची आर्च से सज्जित है और इसे प्रसिद्ध वास्तुकार एडविन ल्यूरियन्स ने डिजाइन किया है। यह इमारत लाल पत्थर से बनी है जो एक विशाल ढांचे के मंच पर खड़ी है। इसके आर्क के ऊपर दोनों ओर इंडिया लिखा है। इसकी दीवारों पर 70,000 से अधिक भारतीय सैनिकों के नाम शिल्पित किए गए है। जिनकी याद में इसे बनाया गया है। इंडिया गेट के तल पर एक अन्य स्मारक,अमर जवान ज्योति है, जिसे स्वतंत्रता के बाद जोड़ा गया था। यहाँ निरंतर एक ज्वाला जलती है जो उन सैनिकों की याद में है जिन्होंने इस राष्ट्र की सेवा मे अपना जीवन समर्पित कर दिया। अमर जवान ज्योति की स्थापना 1971 के भारत-पाक युद्ध में लेने वाले सैनिकों की याद में किया गया है।स्मारक के पास से राष्ट्रपति भवन का नजारा देख सकते है।

रविन्द्र भवन

इंडिया गेट का दर्शन करने उपरान्त हम रविन्द्र भवन गए। रविन्द्र भवन के परिसर में प्रवेश करते ही लगता है मानो हम कला और संस्कृति के संसार में आ गए हो। इस भवन के डिजाइन में परम्पराओं और भविष्य के भारत की जलक मिलती है। रवीन्द्र भवन के अंदर साहित्य अकादमी, संगीत नाटक अकादमी और ललित कला अकादमी हैं। इसमें ओपन एयर मेघदूत थिएटर भी है जहां समय-समय पर कई सांस्कृतिक गतिविधियां होती रहती हैं। इस अकादमी का उदघाटन 12 मार्च 1954 को मौलाना आजाद और डॉ. राधाकृष्णन द्वारा किया गया है। यह पत्रिकाओं, हर शैली के व्यक्तिगत रचनात्मक कार्यों, संकलन, मोनोग्राफ, विश्वकोश, शब्दकोश, ग्रंथ सूची और बहुत कुछ प्रकाशित करता है। यहा हमें सभी

भाषा के साहित्य की पुस्तकें देखने मिलती है,पर कोंकणी भाषा में कम ही पुस्तके देखने मिलती है। संगीत नाटक अकादमी संगीत, नृत्य और नाटक के लिए भारत की राष्ट्रीय अकादमी है। अकादमी प्रदर्शन कलाओं से संबंधित ऑडियो / वीडियो टेप, तस्वीरें और फिल्मों को संग्रहित करती है। उसका उद्देश्य हमारी भारतीय सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित और बढ़ावा देना है। यहा हमे शास्त्रीय संगीत,नृत्य, नाटक में उपयोग करने वाले सभी पूराने यंत्र रखे हुए है। यहा के संगीत अकादमी का उद्देश्य यह है कि जो भी कला लुप्त हो रही है, उसे बचाया जाए तथा आगे बढाया जाए और ऐसे लोगों को तैयार करे जो आगे की पीढी को कला को आगे बढ़ाने के लिए सिखाए । यहा पर हमने चार प्रकार के संगीत के यंत्र देखे। यहा हमें अलग-अलग प्रकार के वाद्यों तथा यंत्रों की जानकारी प्राप्त हुई। यहा सिर्फ संगीत के यंत्र ही नहीं बल्कि अलग-अलग राज्यों में,इस्तेमाल किए जाने वाले मुखौवटें भी देखने मिलते है। जैसे कि विरभद्र का अक्स,राजस्थान में इस्तेमाल किए जाने वाले मुखौवटें आदि।वाद्य किस प्रकार से बजाए जाते है इसकी

जानकारी भी हमे वहा के जो देख रेख करने वाले है उन्होंने दी।जैसे उन्होंने बताया कि वाध्य जो है वह अनेक प्रकार से बजता है उदाहरण के लिए दंडा,हाथ,मूह,पैर, उँगलियाँ आदि प्रकार से । उन्होंने संगीत यंत्र के नाम बताएँ जो उनके संगीत अकादमी में रखे गए थे। सीतार,बासरी,सारंगी,तबला,ढोलक,पेटी,सनई, तानपूरा, म्रिदंग,फ्लियूट आदि देखने मिला। वहा जादा तर संगीत के यत्र आदिवासी ही है। वहा के यंत्रों में गाय के चगडे का उपयोग होता है और हमारे यहा हम देखते है कि घुमट के लिए मॉनिटर छिपकली के चमड़े का उपयोग किया जाता है। रविन्द्र भवन के पुस्तकालय में हमें अनेक सास्कृतिक तधा साहित्यिक पुस्तके देखने मिली,जैसे बलावसुधा,इप्टा वार्ता,नटरंग,गगनांचल, आदिवासी संस्कृति,संगीत एवं नृत्य,रंग प्रसंग,स्वर सरिता, राजभाषा रुपाम्बरा, संस्कृति, रंगायन, कलावसुधा आदि जो पुस्तके हमें हमारे विश्वाविद्यालय में नहीं मिलती है,यहा हमें अनेक प्रकार की पुस्तकें तथा संगीत के यत्रों की जानकारी प्राप्त हुई।

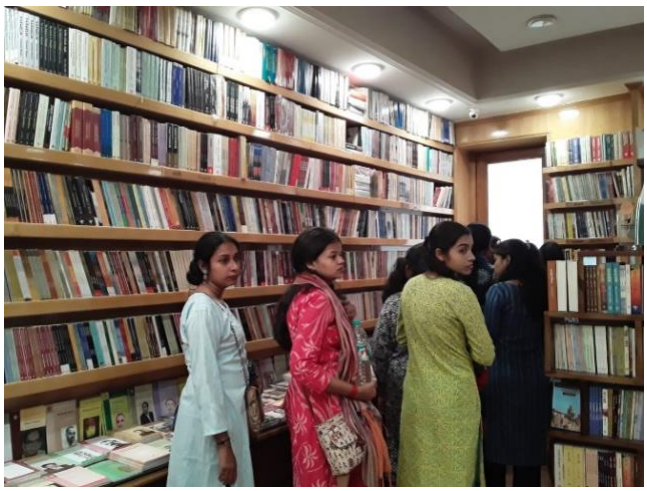

लोटस माहल

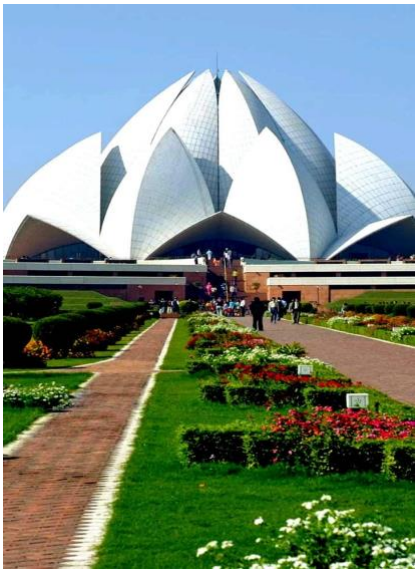

रविन्द्र भवन के बाद हम दुपहर को लोटस माहल दर्शन के लिए निकले,वहा पहुंचने के बाद दोपहर का खाना हमने वहा ही लोटस टेंपल जाने से पहले किया, जहा हमारे कुछ साथीयों के साथ खाने के रेट में घोटाला किया। पहले अलग ही रेट बताकर खाना खाने के बाद मेन्यू -कार्ड के हिसाब से पैसे न लेकर जादा पैसे लिए तथा हमने जिसका ऑर्डर नहीं दिया था वो हमपे थोपा गया और पैसे हड़प लिए। यही नहीं बल्कि वह खाना पार्सल करके लेने के बाद लोटस टेंपल गए तो उन्होंने खाना ले जाने के लिए मना किया तो वह सभी खाना कचरे के डिब्बे में फेकना पड़ा,जिसके कारण हमारे साथीयों के पैसे बरबाद हुए।

लोटस टेंपल के प्रवेश द्वार पर प्रवेश करते ही चारो ओर हरा-भरा ही था, सुंदर-सुंदर फुलों के पौदे लगाए हुए थे। लोटस टेंपल दिल्ली के प्रमुख आकर्षणों में से एक है। यह दिल्ली के नेहरू प्लेस में स्थित है, जो एक बहाई उपासना मंदिर है, जहा कोई मूर्ति या फिर किसी प्रकार की पूजा पाठ नहीं की जाती है। अंदर जाने से पहले हमें अपनी चप्पल निकालकर एक थैंली में रखनी पड़ी और उसके उपरान्त लोटस टेंपल के अंदर प्रवेश करने के लिए एक कतार में खड़ा होना पड़ा,तब दो मार्गदर्शक वहा आए और वहा के नियम बताए कि लोटस महाल के अंदर कोई भी शोर या फिर बातचीत नहीं करनी है,शांति से अन्दर बैठना है। लोग यहां शांति और सूकून का अनुभव लेने के लिए आते है। कमल के समान बनी इस मंदिर की आकृति के कारण इसे लोटस टेंपल कहा जाता है। इसका निर्माण सन 1986 में किया गया था इसी कारण इसे 20 वी सदी का ताजमहल भी कहा जाता है। मंदिर का वास्तु पर्शियन आर्किटेक्ट फरीबर्ज सहबा व्दारा तैयार किया गया है। इसका निर्माण बहा उत्लाह ने करवाया था, जो बहाई धर्म के संस्थापक थे। इसलिए इस मंदिर को बहाई मंदिर भी कहा जाता है। हमने अनुभव किया कि यहा सभी धर्म के लोग आते है और शांति तथा सुकून का लाभ लेते हैं। मंदिर आधे खिले कमल की आकृति में संगमरमर की 27 पंखुड़ियों से बनाया गया है, जो कि 3 चक्रों में व्यवस्थित

हैं। मंदिर चारों ओर से 9 दरवाजों से घिरा है और बीचोंबीच एक बहुत बड़ा हॉल स्थित है। जिसकी ऊंचाई १० मीटर है, इस हॉल में करीब 2500 लोग एक साथ बैठ सकते हैं।

हुमायूँ का मकबरा

यहा से हम हुमायूँ के मकबरे के दर्शन के लिए निकले। यह मकबरा मुगल सम्राट हुमायूं की याद में उनकी पहली पत्नी हाजी बेगम द्वारा निर्मित करवाया गया है। हाजी बेगम ने हुमायूं की मुत्यु के नौ साल बार 1565 में इस मकबरे का निर्माण कार्य शुरू करवाया था जो 1572 ई में पूरा हुआ। लाल बलूआ पत्थर और सफेद संगमरमर पत्थरों से बने इस मकबरे की संरचना इस्लामिक और फारसी वास्तुकला का मिश्रण है। यह मकबरा सुबह 6 बजे से रात के 6 बजे तक खुला रहता है। यहा हम प्रवेश शुल्क देकर गए। इसकी विशेषता यह है कि मकबरे की चार बाग शैली, स्पष्ट बल्बनुमा गुंबद, कोनों पर पतले बुर्ज, चौड़े प्रवेश व्दार, सुंदर सुलेख अरबी और स्तंभों तथा दीवारों पर ज्यामितीय पैटर्न एवं स्तभों पर समर्थित महल हॉल आदि है।

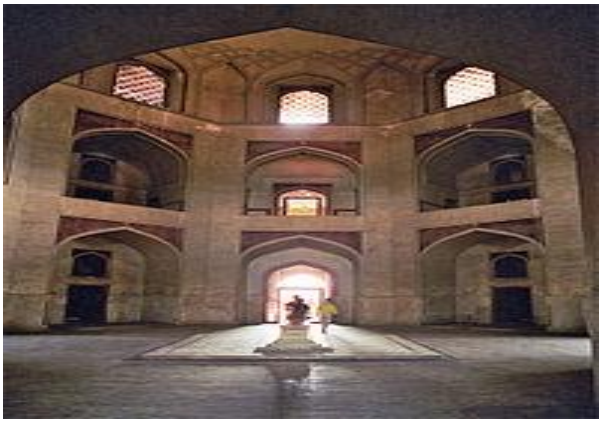

राष्ट्रपति भवन

यहा से हम श्याम को राष्ट्रपति भवन गए । राष्ट्रपति भवन श्याम को देरी से पहुंचे। राष्ट्रपति भवन को हमने हमारी बस में बैठकर ही देखा। रात होने के कारण राजभवन में डाली गई लाइट्स के कारण वह बहुत सुंदर दिख रहा था। राजभवन में रोशनी ही रोशनी छा गयी थी। पहले यह राजभवन वायसराय हाउस के नाम से प्रसिद्ध था। यह भारत के गौरव में चार चांद लगाती है। 26 जनवरी 1950 को जब भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र बना तब राष्ट्रपति भवन को इसकी एक स्थाई संस्था के रूप में अपनी जगह मिली। यह 4 मंजिली इस इमारत में 340 कमरे हैं और इसे बनाने में लगभग 17 साल का समय लगा। इसका निर्माण एडविन लेसिएर ने किया । राष्ट्रपति भवन का सबसे आकर्षक फीचर सेंट्रल डोम को माना जाता है, यह हमे सांची के स्तूप की याद दिलवाता है और यह इमारत से लगभग 55 फुट ऊपर एक मुकुट की तरह इस भवन की शोभा बनाए है। राष्ट्रपति भवन को प्रत्यक्ष देखकर बहुत अच्छा लगा।

राष्ट्रपति भवन को देखने के बाद हम बिरला मंदिर में गए जिसे लक्ष्मी नारायण मंदिर असल में कहा जाता है, पर दुनिया बर के लोग इसे बिरला मंदिर के नाम से जानते है। जिस मंदिर में जाति - धर्म के नाम पर कोई भेदभाव नहीं किया जाता है। इस मंदिर में हमने लक्ष्मी नारायन का दर्शन लिया। इस मंदिर का निर्माण देश के महान उद्योगपति बलदेव दास बिरला ने 1939 में किया। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने इसका उदघाटन किया था। कहा जाता है कि बापू ने उद्घाटन करने के समय बिरला जी से एक वादा करवाया था कि यह मंदिर बिना किसी जाति-धर्म का भेदभाव किए सभी के लिए खुला रहेगा। इस मंदिर में माँ लक्ष्मी और भगवान विष्णु के विराजमान होने के कारण इसे लक्ष्मीनारायण मंदिर भी कहा जाता है। इसके परिसर में भगवान गणेश, शिव कृष्ण, हनुमान, माँ दुर्गा और बुद्ध के भी मंदिर है। इस मंदिर की वास्तुकला बहुत ही आकर्षक है। मंदिर का इंटीरियर पौराणिक चित्रों और बहुत से हिन्दू देवताओं के चित्रों से सजाया गया है। हमारे शैक्षणिक यात्रा के दूसरे दिन का यह आखरी दर्शन स्थान था। 21 तारिख को हमने कुल 6 स्थानों का दर्शन करने के बाद हम हाॅटेल

गए। प्राध्यापक ने जिन किसी को खाना खाने बाहर हाॅटेल में जाना था उन्हें 9 बजे हाॅटेल के प्रवेश द्वार पर आने कहा क्यों कि हमें अगले दिन जल्दी उठकर दुसरे स्थानों के दर्शन के लिए जाना था।

दिल्ली विश्वविद्यालय

२२ तारिख को सुबह जल्दी उठकर हम उस दिन के हमारे पहले दर्शन स्थान जाने के लिए निकले और रास्ते में ही हम सभी ने नाश्ता किया। नाश्ता करने के उपरांत हम दिल्ली विश्वाविद्यालय गए । हम सभी जानते ही है कि दिल्ली विश्वाविद्यालय देश का एक प्रमुख विश्वाविधालय है। यह भारत सरकार व्दारा वित्त पोषित एक केन्द्रीय विश्वाविद्यालय है। इसकी स्थापना 1922 फरवरी में तत्कालीन केन्द्रीय विधानसभा के एक अधिनियम के तहत अध्यापन और आवासीय विश्वाविद्यालय के नाते एक संस्थान के तौर पर की गई थी। हम जिस दिन दिल्ली विश्वाविद्यालय गए उन दिनों होली के कारण छात्र-छात्राओं को छुटियाँ थी, जिसके वजह से विश्वाविद्यालय में कोई भी छात्र न थे, हमारे जो रोहताश सर है वो वहा के रहने वाले है, तो उन्होंने हमे दिल्ली विश्वाविद्यालय के अन्दर के कक्षाएँ दिखाई। खास तौर पर वहा की हिंदी विभाग एवं कक्षाओं को हमें दिखाया। विश्वविद्यालय का परिसर भी पेड,पौधे तथा फूलों से बरा हुआ था। विश्वविद्यालय में छात्र-छात्राएँ न होने के कारण हमें उनसे बातचित करने नहीं मिली जिसके कारण हमें वहा दर्शन करने के लिए ज्यादा समय नहीं लगा।

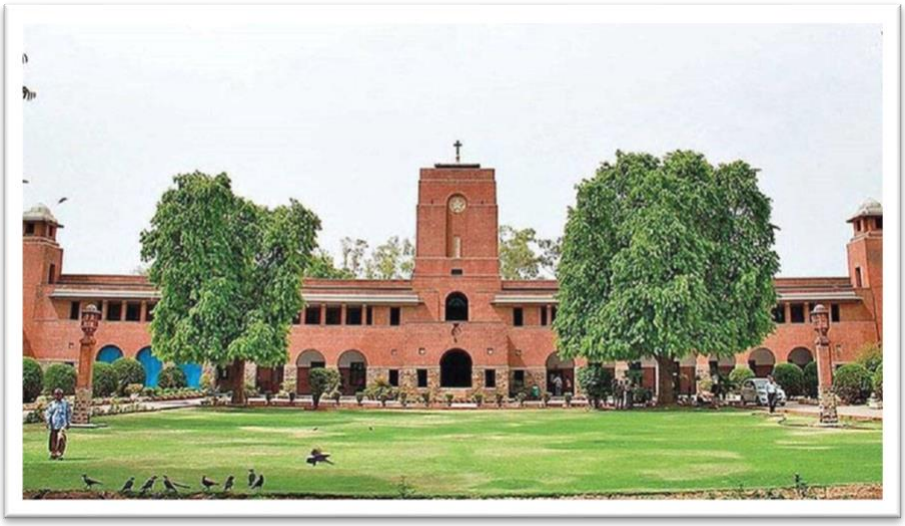

हिन्दू विश्वविद्यालय

दिल्ली विश्वविद्यालय के उपरांत हम हिन्दू विश्वविद्यालय में गए, हमारे साथ रोहताश सर और उनके दोस्त भी थे। हिन्दू विश्वविद्यालय में भी कोई विधार्थी न थे तो वहा के हिंदी विभाग के प्राध्यापक हमें हिन्दू विश्वविद्यालय का दर्शन करवाने के लिए स्वय हमारे साथ आए उन्होंने हमे अच्छी तरह से मार्गदर्शन किया तथा विश्वविद्यालय के विधार्थी वर्ग, प्राध्यापकों का वर्ग,कॉलेज का मैदान तथा होस्टल सभी दिखाया। हिंदी विभाग की प्रभारी प्रो रचना सिंह ने विभाग की विभिन्न गतिविधियों की जानकारी दी और विभाग द्वारा प्रकाशित पत्रिकाओं के अंक बताए।उन्होंने विभाग की संस्थाओं के बारे में भी जानकारी दी। विभाग के अध्यापक डॉ पल्लव ने महाविद्यालय के शिक्षण इतिहास के बारे में बताया कि भरतसिंह उपाध्याय और कृष्ण दत्त पालीवाल जैसे मूर्धन्य विद्वान हिंदी विभाग में अध्यापन कर चुके हैं। गोवा विश्वविद्यालय के डॉ हमारे प्राध्यापक तथा प्राध्यापिका दीपक वरक और डॉ श्वेता गोवेकर ने हमारें दल का परिचय दिया। आयोजन में विभाग के डॉ नीलम सिंह और डॉ नौशाद अली ने भी अपने विचार व्यक्त किए। हम वहा के प्राध्यापकों से मिले उन्होंने बडे स्नेह और आदर से हमें उनके विश्वविद्यालय के पूरे कॅपस में घुमाया।इस विश्वविद्यालय की एक बात खास है कि वहा जो विधार्थी पढ़कर आज अच्छे मुकाम पर है जो भी अभिनेता,राजकिय नेता,आदि बने है उनकी सारों की तस्वीरें वहा विश्वविद्यालय में लगायी हुई हैं। हम सभी ने हिंदू कालेज परिसर का भ्रमण किया और यहां की विभिन्न शोध परियोजनाओं को भी देखा। यह दिल्ली विश्वविधालय के टॉप कॉलेजों में शामिल 'हिन्दू कॉलेज' है जिसके कारण आर्ट्स और कॉमर्स विषयों की पढ़ाई के लिए देश के प्रमुख कॉलेजों में से एक माना जाने वाला यह एक विश्वविद्यालय है। यहां हर साल देश-विदेश से 12वीं कक्षा के बाद लाखों विधार्थी अंडरग्रेजुएट और पोस्ट-अंडरग्रेजुएट कोर्सेज के लिए अप्लाई करते हैं। हिंदू कॉलेज एक ऐसा प्रसिद्ध कॉलेज है जहां से हमारे देश के बहुत से सुप्रसिद्ध हस्तियों ने अपनी ग्रेजुएशन कंप्लीट की हैं और देश-विदेश में भारत का नाम रौशन कर रहे है। यहां के कॉम्पिटिटिव एनवायरमेंट, टॉप फैकल्टी और इंफ्रास्ट्रक्चर के कारण छात्रों को उनके द्वारा चुनी गई स्ट्रीम में आगे बढ़ने के लिए एक दिशा मिलती है। अंत में हमारे साथ हमें मार्गदर्शन करने के लिए आए उसी कॉलेज के विभाग के पूर्व छात्र एवं शोधार्थी रोहताश सर ने हिन्दू विश्वविद्यालय के प्राध्यापक तथा सभी लोगों का आभार व्यक्त किया।

विश्वविद्याल देखने के बाद हम बहार आए तो हम में से एक विधार्थी ने रोहताश सर से सवाल किया कि इस काॅलेज को हिन्दू विश्वविद्यालय ऐसा नाम क्यो दिया गया है, क्या इस विश्वविद्यालय में सिर्फ हिन्दू विधार्थी ही पढ सकते है क्या? तो उन्होंने बताया कि ऐसा कुछ भी नहीं है यहा किसी भी धर्म के विधार्थी पढ सकते है हमें भी विश्वविद्यालय का नाम सुनके पहले ऐसा हि लगा था कि यहा सिर्फ हिन्दू ही पढ सकते है पर रोहिताश सर ने इसकी सही जानकारी दियी और हम जो सोच रहे थे इस सोच को गलत साबित किया।सन 1899 में स्थापित, हिंदू कॉलेज का एक गौरवशाली अतीत है जो इसे देश और दिल्ली शहर से निकटता से जोड़ता है। हिंदू कॉलेज की स्थापना स्वर्गीय "श्री कृष्ण दासजी" ने सन् 1899 में की थी। सन 1922 में दिल्ली विश्वविद्यालय की स्थापना के समय तक, हिन्दू कॉलेज अपनी सामान्य शुरुआत से विकसित हो चुका था। दिल्ली विश्वविद्यालय के सबसे पुराने और पहले से ही प्रसिद्ध कॉलेजों में से एक के रूप में, हिंदू कॉलेज स्वतंत्र भारत के युग में छात्र बॉडी, टीचिंग स्टाफ और सुविधाओं के साथ स्थापित है, जो इसकी स्थापना के बाद से लगातार बढ़े हैं। हमारे एक दिवसीय दर्शन के तिन विश्वविद्यालय में से दुसरी काॅलेज हिन्दू विश्वविद्यालय थी और यहा हमने ज्यादा समय बिताया तथा इस काॅलेज का आनंदता से दर्शन लिया। दिल्ली विश्वविद्यालय से ज्यादा समय हमने हिन्दू विश्वविद्यालय में बिताया और हमें यहा जानकारी भी अच्छी मिली। पर दोनों विश्वविद्यालय की समान बात यह थी कि वहा के बच्चों को होली के त्यौहार के कारण छुट्टियाँ थी, तो दोनों काॅलेजों में विद्यार्थीयों से भेंट न हो पायी, विद्यार्थीयों से भेंट होती तो और मजा आता।

<u>जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय</u>

हिन्दू विश्वविद्यालय के बाद हम हमारे अंतिम विश्वविद्यालय के दर्शन के लिए निकले जो था जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय। जे॰एन॰यू॰,भारत का एक प्रसिद्ध केन्द्रीय विश्वविद्यालय है जो भारत

की राजधानी नई दिल्ली के दक्षिणी भाग में एक विशाल भूभाग लगभग 1020 एकड़ में अवस्थित है। यह मानविकी,समाज विज्ञान,अंतरराष्ट्रीय अध्ययन, भाषा अध्ययन,कंप्यूटर विज्ञान आदि विषयों में उच्च स्तर की शिक्षा और शोध कार्य में संलग्न भारत के अग्रणी संस्थानों में से है ।

जेएनयू को राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (NACC) ने जुलाई 2012 में किये गए सर्वे में भारत का सबसे अच्छा विश्वविद्यालय माना है। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय उत्कृष्टता प्राप्त विश्वविद्यालय है। यह भारत का अग्रणी विश्वविद्यालय तथा शिक्षण और शोध के लिए एक विश्व-प्रसिद्ध केंद्र है। 3.91 के ग्रेड प्वाइंट के साथ राष्ट्रीय मूल्यांकन और प्रत्यायन परिषद द्वारा भारत में अव्वल जेएनयू को राष्ट्रीय संस्थागत रैंकिंग फ्रेमवर्क,भारत सरकार द्वारा भारत में सभी विश्वविद्यालयों में वर्ष 2016 में तीसरा स्थान प्राप्त हुआ तथा वर्ष 2017 में दूसरा प्राप्त हुआ। जेएनयू को वर्ष 2017 में भारत के राष्ट्रपति की ओर से सर्वश्रेष्ठ विश्वविद्यालय का पुरस्कार भी प्राप्त हुआ।

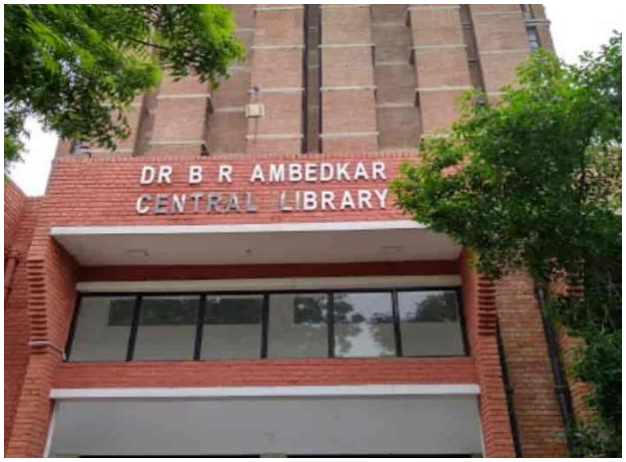

जेएनयू अभी एक युवा विश्वविद्यालय है। इसकी स्थापना वर्ष 1966 में संसद के एक अधिनियम द्वारा हुई थी।कृष्णास्वामी कस्तूरीरंगन जी वर्तमान कुलाधिपति।करीब 600 शिक्षक तथा 8,500 विद्यार्थी संख्या हैं। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय की शक्ति,ऊर्जा और प्रतिष्ठा इस दूरदर्शिता से झलकता है कि इसके विचार साहस, प्रयोग और निरंतर खोज के क्षेत्र हैं, तथा यह कि विचारों की विविधता बौद्धिक अन्वेषण के आधार हैं। जेएनयू बौद्धिक रूप से बेचैन,संतुष्ट न होने वाले जिज्ञासु और मानसिक रूप से कठोर लोगों के लिए ऐसा स्थान है जो उन्हें रमणीय स्थल की शांति के बीच आगे बढने का मौका देता है। यह रमणीय स्थल भारत की राजधानी की चहल-पहल और भीड़ भाड़ के बीच हराभरा क्षेत्र है।

संसद द्वारा अपनी स्थापना के तीन वर्ष बाद1969 में अस्तित्व में आने से जेएनयू भारतीय विश्वविद्यालय प्रणाली में सीमांत विषयों और पुराने विषयों के लिए नए दृष्टिकोण लाया। 1:10 का उत्कृष्ट शिक्षक-छात्र अनुपात, शिक्षण के माध्यम का तरीका जो छात्रों को पहले से प्राप्त ज्ञान को पुनः प्रस्तुत करने के बजाय अपनी रचनात्मकता को तलाशने के लिए प्रोत्साहन देता है,और अनन्य रूप से

आंतरिक मूल्यांकन आदि भारतीय शैक्षिक परिदृश्य के लिए भी नए थे और समय की कसौटी पर खरे उतरे हैं। विश्वविद्यालय की स्थापना में अंतर्निहित नेहरूवादी उद्देश्य-'राष्ट्रीय एकता, सामाजिक न्याय,धर्मनिरपेक्षता,जीवन का लोकतांत्रिक तरीका,अंतरराष्ट्रीय समझ और समाज की समस्याओं के प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण' स्वयं से प्रश्न पूछने के माध्यम से जानकारी को नवीकृत करने के लिए निरंतर और ऊर्जावान प्रयास उनमें रचा-बसा हुआ था।

विश्वविद्यालय के शैक्षिक दर्शन से इसकी अपरंपरागत शैक्षिक संरचना में बदलाव आए हैं। ज्ञान की एकता में विश्वास से ओत-प्रोत जेएनयू में पारंपरिक विश्वविद्यालयों में संकीर्ण संकल्पना विभाग की संरचना से बचने की कोशिश की है। इसके बजाय कुछ व्यापक और समावेशी इकाइयों,जिनके सहभागी दायरे में सेंटर नामक और अधिक विशेषीकृत इकाइयां होंगी, के भीतर संबद्ध विषयों को लाना पसंद किया गया।यहां विशेष केंद्र भी हैं जो स्कूल की व्यापक संरचनाओं के बाहर हैं, परंतु ये आगे और बढ़ सकते हैं। इसके बाद,शोध संकुल हैं जो स्कूलों और केंद्रों तथा कुछ पाठ्यक्रमों जैसे प्रतीत होते हैं जिन्हें कुछ विशिष्ट स्कूलों के भीतर रखा गया है परंतु ये पूरे विश्वविद्यालय में शिक्षकों की रूचि के आधार पर बनाए गए हैं।विश्वविद्यालय में तेरह स्कूल और सात विशेष केंद्र हैं।

जेएनयू विदेशी भाषाओं में पांच वर्षीय एकीकृत एमए पाठ्यक्रम संचालित करने वाला पहला विश्वविद्यालय है। स्नातकोत्तर स्तर पर जहां अधिकांश स्कूल अपने अकादमिक पाठ्यक्रम शुरू करते हैं, यहां प्रशिक्षण मुख्यतः एकल विषयों की ओर केन्द्रित है (यद्यपि,सभी एमए छात्रों को अपने विषय के अलावा कुछ अन्य पाठ्यक्रम करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है) परंतु शोध स्तर पर विषयी सीमाएं और अधिक पारगम्य हो जाती हैं। अतिव्यापी या सीमावर्ती क्षेत्रों - जैसे, पर्यावरण और साहित्यिक अध्ययन,अर्थशास्त्र और विज्ञान, समाजशास्त्र और सौंदर्यशास्त्र,या भाषाविज्ञान और जीवविज्ञान जेएनयू के पीएचडी छात्रों के बीच असामान्य नहीं है। न केवल शोध छात्रों को अपने विषय-क्षेत्र की अदृश्य दीवारों को पार करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, अपितु शिक्षा जगत और बाहरी दुनिया के बीच संबंधों पर भी बातचीत चलती रहती है। इससे प्रायः समाज,संस्कृति और विज्ञान की समझ विकसित करने के लिए क्रॉसरोड बनाने वाले क्षेत्रों में पारस्परिक रूप से लाभप्रद सहयोग के परिणाम निकलते हैं।

जेएनयू अपनी शैक्षिक संरचना के अनुसार ही शिक्षण प्रक्रिया और मूल्यांकन पद्धति में भारत में ऐसा पहला विश्वविद्यालय हुआ है जिसने अंतिम परीक्षा को उपलब्धि-मापन के एकमात्र तरीके को गौण करके निरंतर सीखने की प्रक्रिया पर बल देकर उस परंपरागत मार्ग को छोड़ा है। यहां ग्रेडिंग पूरे सेमेस्टर के दौरान की जाती है। इसमें पाठ्यक्रम कार्य में छात्रों की भागीदारी सुनिश्चित की जाती है तथा कक्षा में

ज्ञान पैदा करने की सहयोगात्मक प्रक्रिया को पुनर्जीवित किया जाता है। एम.ए. स्तर के छात्रों को भी सीमित विषयों में स्वतंत्र शोध परियोजनाएं करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है जिससे अल्पकालिक पेपर तैयार होता है।अपने नियमित संकाय-सदस्यों के अलावा जेएनयू ने पिछले वर्षों के दौरान विशिष्ट 'पीठ' -राजीव गांधी पीठ,अप्पादुरई पीठ,नेल्सन मंडेला पीठ, डॉ अम्बेडकर पीठ,आरबीआई पीठ,एसबीआई पीठ, सुखमय चक्रवर्ती पीठ,पर्यावरण विधि पीठ,ग्रीक पीठ,तमिल पीठ,और कन्नड़ पीठ की स्थापना की है।

कई संकाय-सदस्यों और शोध छात्रों ने अपने अकादमिक काम के लिए प्रतिष्ठित राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार जीते हैं। विश्वविद्यालय के संकाय-सदस्य कई अकादमिक एसोसिएशनों के अध्यक्ष हैं। जेएनयू की विशेषज्ञता की अत्यधिक मांग है तथा इसके संकाय-सदस्यों ने विभिन्न पदों तथा - राजदूत/ उच्चायुक्त और योजना आयोग जैसे महत्वपूर्ण निकायों के सदस्य के रूप में भारत सरकार की सेवा की है। विश्वविद्यालय के बहुत से संकाय-सदस्यों ने अन्य विश्वविद्यालयों के बतौर कुलपति भी सेवा की है तथा कर रहे हैं।

विश्वविद्यालय चार शोध-पत्रिकाएं निकालता है जो भारत और विदेशों में उच्च शैक्षिक जगत में देखी जाती हैं। उक्त शोध-पत्रिकाएं स्टडीज इन हिस्ट्री, इंटरनेशनल स्टडीज,जेएसएल (भाषा,साहित्य औरसंस्कृति अध्ययनसंस्थान की शोध-पत्रिका,) और हिस्पैनिक हॉरीजन्स हैं। जेएनयू के कई संकाय-सदस्य उपरोक्त चार के अलावा कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं का संपादन भी करते हैं।

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय ने शोध परियोजनाओं, सम्मेलनों,और प्रकाशनों में दुनिया भर के विश्वविद्यालयों के साथ सहयोग किया है। विश्वविद्यालय ने अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय विश्वविद्यालयों के साथ समझौता-ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं तथा उनके साथ नियमित रूप से संकाय-सदस्यों और छात्रों का आदान-प्रदान करते हैं। यहां कुछ अंतरराष्ट्रीय डिग्री पाठ्यक्रमों के भारतीय पाठ्यक्रम (इंडियन सेगमेंट) भी संचालित किए जाते हैं।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) द्वारा विश्वविद्यालय के कई शैक्षिक केंद्रों को 'उत्कृष्टता केन्द्र' घोषित किया गया है । उक्त केन्द्र ऐतिहासिक अध्ययन केंद्र(सीएचएस),सामाजिक पद्धति अध्ययन केंद्र(सीएसएसएस),राजनीतिक अध्ययन केंद्र(सीपीएस),आर्थिक अध्ययन एवं नियोजन केंद्र(सीईएसपी),क्षेत्रीय विकास अध्ययन केंद्र(सीएसआरडी),और जाकिर हुसैन शैक्षणिक अध्धयन केन्द्र हैं।ये सभी केन्द्र सामाजिक विज्ञान संस्थान में हैं। इसके अलावा,तीन विज्ञान स्कूलों- भौतिक विज्ञान संस्थान,जीवन विज्ञान संस्थान तथा पर्यावरण विज्ञान संस्थान को भी यूजीसी द्वारा 'उत्कृष्टता केन्द्र' के

रूप में मान्यता प्राप्त हुई है । भाषा,साहित्य और संस्कृति अध्ययन संस्थान (एसएलएल एंड सीएस) के अंग्रेजी अध्ययन केन्द्र को भी यूजीसी के विशेष सहायता कार्यक्रम के तहत विभागीय शोध सहायता हेतु चिह्नित किया गया है। जेएनयू को भी यूजीसी द्वारा 'यूनिवर्सिटी ऑफ एक्सीलेंस' का दर्जा दिया गया है।

जेएनयू का डॉ बी आर अम्बेडकर केंद्रीय पुस्तकालय एक विशाल पुस्तकालय है,जो की 9 मंजिला भवन में स्थापित है। इस पुस्तकालय में 5 लाख से अधिक पुस्तकें हैं,विभिन्न भाषाओं के समाचार पत्र,विभिन्न विषयों की अनुसंधान पत्रिकाएं एवं शोधार्थी द्वारा जमा किए गए थीसिस एवं डिसर्टेशन,विभिन्न विषयों के डेटाबेस,गवर्नमेंट डॉक्युमेंट्स,यूएन डॉक्युमेंट्स आदि उपलब्ध है। यह पुस्तकालय पूर्णतः कंप्यूटरीकृत एवं वातानुकूलित है। यह पुस्तकालय 24 घंटे खुला रहता है। रात्रि में भी यह पुस्तकालय विद्यार्थियों से भरा रहता है। इस पुस्तकालय में दृष्टिबाधित छात्रों के लिए विशेष रीडिंग रूम बनाया गया है जिसका नाम हेलेन केलर यूनिट है,जिसमें बहुत सारे कंप्यूटर लगे है एवं इनमें विभिन्न सॉफ्टवेयर लगे हुए हैं, जिससे छात्रों को कंप्यूटर प्रयोग करने में सुविधा होती है। पुस्तकालय के कर्मचारी दिन-रात छात्रों को अपनी सेवाएं प्रदान करते हैं।

हम सभी को जेएनयू कॉलेज के हिंदी विभाग के दो छात्रों ने उनकी हिंदी विभाग के पुस्तकालय, कैम्पस तथा कैन्टिन मै घुमाया और कुछ जानकारी भी दि और हमसे भी हमारे विश्वविद्यालय के बारे में पुछा। यह विश्वविद्यालय एक लोकप्रिय तथा प्रसिद्ध विश्वविद्यालय है,जहा जाने का हर एक का सपना होता है। पढ़ने न सही कम से कम एक बार जाना तो हर खिसी को होता हैं, उसी प्रकार हमें भी जाना था और हम पहुंचे भी। यह विश्वविद्यालय भारत के सभी विश्वविद्यालयों में से दुसरे क्रमाक पर आता है। यहा बच्चे दूर-दूर से खास पढ़ने के लिए आते है और हम अपने आप को ख़ुशनसीब समझते है क्यो कि हम इस विश्वविद्यालय में पहुंचे।

सबसे खास बात जो इस विश्वविद्यालय की है वह है इस विश्वविद्यालय के प्रेजिडेंट का चुनाव। इस विश्वविद्यालय के चुनाव के बारे में बहुत सी बातें सिर्फ सुनी थी पर वहा जाकर स्वय अनुभव भी की। हम जब जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में गए तभी उनका चुनाव का महौल था, तो वहा हर तरफ शोर ही शोर था। चुनाव के कारण वहा का माहौल थोड़ा गर्म भी

था। चुनाव के कारण विश्वविद्यालय के प्रवेश द्वार पर रक्षक तैनात कीए गए थे। जीनोंने हमें बताया कि आप गलत समय पर आए है यह भी कह सकते है और अच्छे भी। गलत इसलिए क्योंकि वहा का माहौल विश्वविद्यालय को पूरी तरह आराम से घुमने का न था और सही समय क्योंकि वहा का चुनाव के वक्त जो माहौल होता है वह देखने लायक होता है। जिस प्रकार नेता लोगों का चुनाव होता है उससे भी बढकर माहौल जेएनयू विश्वविद्यालय का था। हम जब प्रथम प्रवेश द्वार से विश्वविद्यालय के पास पहुंचे, तो वहा से पुस्तकालय जाने के लिए गए तो एक लडकी हाथ में सिगरेट और चाय का कप लिए खडी थी वही दुसरी ओर बच्चों में दंगे शुरू थे, जिस वातावरण का हमने स्वय अनुभव लिया। जेएनयू का पुस्तकालय हमने अच्छी तरह से देखा क्योंकि कैम्पस के गर्म वातावरण के कारण हम वहा की कक्षाओं को देख न पाए तो वह भी समय हमने पुस्तकालय में बिताया। वह मुख्य पुस्तकालय होने के कारण वहा हिंदी साहित्य की सारी किताबें थी जो हमारे पुस्तकालय में उपलब्ध नहीं है। हमारे गोवा और जेएनयू विश्वविद्यालय की एक बात सामान्य थी,जो था वहा और गोवा विश्वविद्यालय का परिसर। जिस प्रकार गोवा का विश्वविद्यालय झाडियों के बीच में है उसी प्रकार जेएनयू भी है। यहा जाकर हमें बहुत अच्छा लगा। मुझे खुशी हुई क्योंकि हमें जेएनयू जैसे भारत में सभी विश्वविद्यालयों में दुसरे क्रमाक पर होने वाले विश्वविद्यालय में जाने का मौका मिला,जहा बड़े-बड़े अभिनेता,राजकिय नेता,लेखक तथा आय.पी.एस. पढ़कर बड़े हुए इस जेएनयू में जाने और अनुभव लेने का हमें मौका मिला। इसके बाद हम हमारे उस दिन के अंतिम स्थल पर जाने के लिए निकले और वह था कुतुब मीनार।

कुतुब मीनार

कुतुब मीनार भारत में दिल्ली शहर के महरौली में ईंट से बनी, विश्व की सबसे ऊँची मीनार है। यह भारत का सबसे खास और प्रसिद्ध पर्यटक स्थल है। कुतुब मीनार दिल्ली के दक्षिण इलाक़े में महरौली में है। यह इमारत हिंदू-मुग़ल इतिहास का एक बहुत खास हिस्सा है, कुतुब मीनार को यूनेस्को द्वारा भारत के सबसे पुराने वैश्विक धरोहरों की सूचि में भी शामिल किया गया है।यह दिवार दुनिया की सबसे बड़ी ईटों की दीवार है जिसकी ऊंचाई 72.5 मीटर है। मोहाली की फतह बुर्ज के बाद भारत की सबसे बड़ी मीनार में कुतुब मीनार का ही नाम आता है। कुतुब मीनार के

आस-पास परिसर क़ुतुब काम्प्लेक्स है जो कि यूनेस्को वर्ल्ड हेरिटेज साईट भी है।दिल्ली सल्तनत के संस्थापक क़ुतुब-उद-दिन ऐबक ने ईस्वी सन् 1200 में कुतुब मीनार का निर्माण करवाना शुरू किया था और इसके बाद 1220 में ऐबक उत्तराधिकारी और पोते इल्तुमिश ने इस मीनार में तीन मंजिल और बनवा दी थी। इसके बाद 1369 में सबसे उपर वाली मंजिल बिजली कड़कने की वजह पूरी तरह से टूट कर गिर गई, तो फिरोज शाह तुग़लक़ ने एक बार फिर से कुतुब मीनार का निर्माण करवाना शुरू किया और वो हर साल 2 नई मंजिले बनवाते रहे। उन्होंने मार्बल और लाल पत्थर से इन मंजिलों को बनवाया है। कुतुबमीनार का निर्माण करवाना शुरू ऐबक ने किया था और पूरा करवाया इल्तुतमिश ने और 1369 में मीनार को दुर्घटना के कारण टूट जाने के बाद दुरुस्त करवाया फिरोजशाह तुगलक ने। क़ुतुब मीनार को बनाने वाले इंसान का नाम बख्तियार काकी बताया जाता है जो कि एक सूफी संत था।क़ुतुब मीनार पर पारसी-अरेबिक और नागरी भाषाओं में इसके इतिहास के बारे में कुछ अंश दिखाई देते हैं। लेकिन क़ुतुब मीनार के इतिहास को लेकर जो भी जानकारी हैं वो फ़िरोज़ शाह तुगलक (1351-89) और सिकंदर लोदी (1489-1517) से प्राप्त हुई है। क़ुतुब मीनार की इमारत के अंदर गोलाकार 379 सीढ़ियाँ हैं जो की पूरी इमारत की उंचाई तक है।क़ुतुब मीनार के इतिहास के बारे में बात करें तो शिलालेख मीनार में अरबी और नागरी लिपि में शिलालेख हैं। जो इसके इतिहास के बारे में बताते हैं। यहा हम मीनार के चारो ओर घुमे तथा बहुत सारी तस्वीरें खिची यहा जाना हर एक का सपना होता है क्योकि काफी लोगों को हमारे जो पुराने एतिहासिक स्थल है उने देखना पसंद है।

यहा की सबसे खास बात जो है वह वहा का लोहे का स्तंभ जिसे कीर्ति स्तंभ के नाम से जाना जाता है। माना जाता है कि यह स्तंभ चंद्रगुप्त-II के जमाने में मध्यप्रदेश में बनाया गया था और फिर उसे अलग से दिल्ली लाया गया। मान्यता तो यह भी है कि इसे विष्णु मंदिर की ध्वज फहराने के लिए बनाया गया था, लेकिन इसे फिर कुतुब मीनार के पास लाया गया। 1600 सालों से यह खड़ा है, लेकिन इसमें जंग नहीं लगी है। इस स्तंभ का डायामीटर 48 सेंटिमीटर है और इसमें लिखे गए वाक्य ब्राह्मी लिपि में हैं।

हमें लगा था कि हम कुतुब मीनार के अंदर जा सकते है लेकिन नहीं जा पाए। पहले जो लोग यहा घुमने आते थे वे मीनार के अंदर जा सकते थे लेकिन उसके बाद किसी हादसे के कारण मीनार के दरवाज़े बंद किये गए। तो मैंने इस हादसे का कारण जानने के लिए गूगल किया तो यह जानकारी प्राप्त हुई कि एक बार कुतुब मीनार देखने के लिए बहुत से लोग आ गए थे और सभी एक साथ मीनार के दरवाजे से अंदर चले गए। इसके बाद वहां भगदड़ मच गई। दरअसल, मौसम खराब होने की वजह से सीढ़ियों में लगी लाइटिंग फेल हो गई और रके वहां किसी लड़की के साथ कुछ लड़कों ने छेड़खानी कर दी तो,लड़की ने नीचे की ओर भागना शुरू किया और मीनार में अफवाह फैल गई कि वह गिरने वाली है जिसके कारण लोगों ने दरवाजे की तरफ भागना शुरू कर दिया। वहां जो झरोखों से रोशनी आती थी वह लोग ज्यादा होने के कारण झरोखे बंद हो गए।

कुतुब मीनार के दरवाजे अंदर की तरफ खुलते थे और जब लोग ज्यादा हुए तो अंदर की तरफ से दरवाजे बंद हो गए जिसकी वजह से लोग बाहर नहीं आ पाए और बचाव कर्मी अंदर नहीं जा पाए। इसके बाद किसी तरह से इमरजेंसी डोर से अंदर फंसे हुए लोगों को निकाला गया,लेकिन तब तक काफी कुछ हो चुका था। करीब 45 लोगों की इस दौरान मृत्यु हो गई थी और कई लोग घायल थे। इसमें से अधिकतर स्कूल जाने वाले बच्चे थे जो, पिकनिक मनाने कुतुब मीनार आए हुए थे। इसके बाद से कुतुब मीनार के अंदर जाकर उसे घूमने का पूरा सिस्टम बंद कर दिया गया। कुतुब मीनार का दर्शन करते अन्धेरा हो गया तो हम वहा पूरा घुमने के बाद सभी बस मैं बैठ गए और हमारे होटल के लिए निकले,होटल पहुंचने के बाद हमारे प्राध्यापक ने हमारे अगले दिन का कार्यक्रम बताया, तो हमे ताजमहल, मथुरा और वृंदावन जाना था जिसके कारण जल्दी उठना था, तो हम सभी अपने-अपने रुम में गए और फ्रैश होकर सो गए और सुबह जल्दी उठकर 4:30 को होटल से ताजमहल के लिए रवाना हुए। बीच में सुबह का नाश्ता किया।

<u>ताजमहल</u>

22 तारीख को हम ताजमहल जाने निकले,जिसका सिर्फ नाम और तस्वीरें हमने देखी थी। जो दुनिया के 7 अजूबे में से एक है। ताजमहल का नाम लेते ही सब के दिमाग में उसकी आकृति निर्माण होती है और इसे प्रत्यक्ष अपने आँखों से देखना हर एक का सपना होता है। ताजमहल प्रेम की निशानी मानी जाती है। हम ताजमहल पहुंचे तो बस से उतरे ।कोई भी गाड़ी ताजमहल के पास ले जाना मना है तो हम ऑटो लिए ताजमहल गए। हमारे साथ हमारा गाईड भी था जो हमें ताजमहल घुमाते वहा की जानकारी तथा कुछ ऐतिहासिक बातें भी बता रहा था। हम ताजमहल के पास पहुंचे तो वहा एक कतार में जाँच के लिए रुकना पड़ा, हम हमारे साथ अंदर कुछ भी नहीं ले जा सकते थे सिवा मोबाईल और पैसो के,कोई भी खाने की चीज़ अंदर ले जाना मना था। ऐसा माना जाता है कि ताजमहल मार्बल से बनाया है तो पोलुशन के कारण ताजमहल को कोई हानी न हो जिसके कारण वहा पेट्रोल की गाडियाँ ले जाना मना है। यह केवल एक पर्यटक स्थल न होकर यह वो इमारत है, जो मुगल काल का प्रतिनिधित्व करती है। यह पति-पत्नी के बीच अपार प्रेम का भी प्रतीक है। हमारे साथ जो गाईड थे उन्होंने हमें ताजमहल के बारे में जानकारी दी कि शाहजहान ने अपनी तीसरी पत्नी मुमताज महल चौदहवें बच्चे को जन्म देने के बाद

उनकी मौत हो गयी उसके उपरान्त उन्होंने ताजमहल का निर्माण कराया। अपनी नायाब कारीगरी और वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध ऐतिहासिक ताजमहल विश्व की सबसे अधिक देखे जाने वाली इमारतों में

शामिल है। ताजमहल उत्तर प्रदेश का एक मशहूर मकबरा है, यह विश्व धरोहर स्थल के रूप में यूनेस्को द्वारा मान्यता प्राप्त है। ताजमहल विश्व प्रसिद्धता के लिए जाना जाता है। यह भारत के प्रमुख पर्यटन स्थलों में से एक है,यह मकबरा मुग़ल सम्राट शाहजहां की पत्नी मुमताज़ महल की याद में बनाया गया है। ताजमहला का इतिहास देखे तो,ताजमहल का निर्माण सन् 1632 से 1653 तक चला और इसे उस समय के अद्वितीय मुग़ल वास्तुकला का उदाहरण माना जाता है।यह लाल किले के समीप यमुना नदी के किनारे स्थित है। ताजमहल का निर्माण उस समय शाहजहां द्वारा शुरू किया गया था, जब उनकी पत्नी मुमताज़ महल ने अपनी मृत्यु के पश्चात उनसे एक वादा लिया था कि उसकी याद में दुनिया का सबसे सुंदर मकबरा बनाया जाए। ताजमहल के निर्माण में लाल पत्थर,सफेद मार्बल, पीतल, सोना, नीलम, मोती, मकरानी पत्थर और अन्य रत्नों का उपयोग किया गया है। इसे प्रेम का प्रतीक माना जाता है, ताजमहल की सुंदरता उसके विस्तृत मकबरा के साथ ही उसकी वास्तुकला,विशालता और सुंदर नक्काशी में छिपी है,यह उच्च कला की एक अद्वितीय उपलब्धि है और संस्कृति, ऐतिहासिकता और प्रेम का प्रतीक माना जाता है इसकी आकृति, आदर्श तरीके से प्रतिबिंबित विन्यास और ज्योतिर्मय चतुर्भुज संरचना इसे एक महान आर्किटेक्चरल श्रृंगार के रूप में प्रमुख बनाती है।इसके निर्माण के लिए राजमिस्त्री,पत्थर काटने वाले,बढ़ई,चित्रकार,गुंबद बनाने वाले और अन्य कारीगरों को पूरे मुगल साम्राज्य,मध्य एशिया और ईरान से बुलाया गया था। इसके मुख्य वास्तुकार उस्ताद अहमद लाहौरी थे। ऐतिहासिक दस्तावेजों की मानें,तो ताजमहल को बनाने में 20,000 कारीगर लगे थे। ताजमहल दिन में कई बार अपना रंग बदलता है। ताजमहल सफेद संगमरमर से बना है,इसलिए जब इस पर सूरज की रोशनी पड़ती है तो यह पीले रंग का हो जाता है। वहीं शाम होते ही यह नीले रंग का दिखाई देने लगता है। ताजमहल के अंदर जाने के लिए 200 रुपए लिए जाते है और अंदर जाने से पूर्व पैरो को मोजे डालने होते है जिससे वहा का जो मार्बल से बना फर्श है उसे हानी न हो। ताजमहल के चारो ओर जो चार स्तंभ बने है उनके पिछे भी कारण है कि, अगर तुफान या फिर भाड आ जाए तो ये जो चार स्तंभ है वह ताजमहल का तुफान से बचाव करेंगे। हम सभी ताजमहल के अंदर गए तो एकदम मन प्रसंन हुआ। अंदर इतना थंडा वातावरण था जैसे वहा एसी लगायी हो। एक तो कडी धूप के कारण बहुत गर्मी हो रही थी और सोचा भी न था कि अंदर इतना थंडा वातावरण होगा,ताजमहल मार्बलस का होने के कारण कडी धूप होने के बाद भी अंदर थंड थी। इसके उपरान्त हमें मथुरा और वृंदावन भी जाना था तो दोपहर का भोजन हमने वहा ही किया और हमारे अगले स्थान के दर्शन के लिए निकले।

मथुरा

हमारा अगला दर्शन स्थान था मथुरा तथा वृंदावन। हम सभी पहले मथुरा के लिए निकले।मथुरा उत्तर प्रदेश जिले में यमुना नदी के तट पर बसा एक सुंदर शहर है। यमुना नदी के पश्चिमी तट पर बसा विश्व के प्राचीन शहरों में से एक मथुरा प्राचीन भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता का केंद्र रहा है। इस शहर का इतिहास बहुत ही पुराना है। यह शहर रामायण काल से पूर्व भी अस्तित्व में है।भारत की सात प्राचीन नगरी अयोध्या, मथुरा, काशी,कांची,अवंतिका और द्वारका में से एक है मथुरा। 500 ईसा पूर्व के प्राचीन अवशेष हैं, जिससे इसकी प्राचीनता सिद्ध होती है। पौराणिक साहित्य में मथुरा को अनेक नामों से संबोधित किया गया है जैसे- शूरसेन नगरी, मधुपुरी,मधुनगरी,मधुरा आदि। हरिवंश और विष्णु पुराण में मथुरा के विलास-वैभव का वर्णन मिलता है।भगवान श्रीकृष्ण का जन्म मथुरा के कारागार में हुआ था। उस काल में मथुरा पर कंस का राज था। कंस के बाद मथुरा पर राजा उग्रसेन ने शासन किया। मथुरा के आसपास वृंदावन,गोवर्धन,गोकुल, बरसाना आदि कई ऐसे गांव,कस्बे और शहर बसे हैं जो कि श्रीकृष्ण के जीवन से जुड़े हुए हैं।

मथुरा हिंदू धर्म के लिए एक पवित्र शहर है और कृष्ण की भूमि बृज भूमि का दिल माना जाता है। मथुरा का जुड़वाँ शहर वृंदावन है। मथुरा और उसके पड़ोसी शहरों में ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व के कई स्थान हैं। कृष्ण जन्मस्थान मंदिर परिसर मंदिरों का एक महत्वपूर्ण समूह है जो कि भगवान् कृष्ण की जन्मभूमि मानी जाती है।मंदिर परिसर में केशव देव मंदिर,गर्भ गृह मंदिर,भागवत भवन और रंगभूमि है।

हर एक की आशा होती है कि कम से कम एक बार सही ही कृष्ण के जन्मस्थान पर हो आए जिसका जिक्र हम सिर्फ ऐतिहासिक पुस्तकों तथा फिल्मों के माध्यम से जानते है।खासकर वो लोग जिने कृष्ण से बहुत लगाव है और कृष्ण के बड़े भक्त है।हमारे सहपाठियों में से अनेक थे जिनके चहरे पर से कृष्ण जन्मभूमि को अंदर जाकर देखने की लालसा दिखाई दे रही थी। उस वक्त होली का त्यौहार था, तो वह

श्री कृष्ण की जन्मभूमि होने के कारण बडे ही धूम-दाम से वहा पूरा महिना मनायी जाती है। हम सभी भी बडी आशा रखकर गए थे कि हमें होली देखने तथा खेलने मिलेगी।मंदिर के पास पहुंचते हमें रात हो गयी।पहुंने के बाद मंदिर के भीतर जाने के लिए एक कतार में रुकना पडा,वहा हमारा पूरा सामान जमा कर के मंदिर में प्रवेश किया वहा बहुत भीड थी और रात होने के कारण उनका होली खेलकर भी खत्म हुआ था जिसके कारण जो होली खेलने मिलेगी इस आशा से गए थे उनके चहरे पर कुछ वक्त के लिए निराआशा आयी।यहा से भीड में एक-दुसरे को धंका-वंका देते आखिर कार हमे भगवान विष्णु का दर्शन हुआ और तुरंत परदा गिराया गया। सारे यही बोलने लगे कि हम सही समय पर पहुंचे जिससे भगवान का दर्शन कर पाए। समय कम होने के कारण हम वहा कुछ समय घूमकर बाहर आए,रात होने के कारण वहा से चंद्रमा की प्रतिमा बहुत अच्छी दिखायी दे रही थी। एक तो दिरे-दिरे अंधेरा छा रहा था और उपर से हमारे पास समय भी बहुत कम था,इसके बाद हमे वृंदावन भी जाना था तो हम कुछ समय का दर्शन करने के उपरांत वृंदावन के लिए निकले।

वृंदावन

वृंदावन के मंदिर में हमें गलियों की संडकों से जाना था,तो हम सभी रिक्शा से उस मंदिर तक गए।पहले हमें मालूम नहीं था कि वृंदावन में हम कौनसे मंदिर में दर्शन करने जा रहे है,जब हम रिक्शा से उतरे तब वहा जो गाईड थे तो हमारे मंदिर के पास पहुचने पर उन्होंने बाके बिहार श्री कृष्ण की जय कहा तब पता चला कि यह मंदिर बाके बिहार श्री कृष्ण का है। गाईड हमें मंदिर की जानकारी देते अंदर लेकर गया,जो जानकारी हमें सही नहीं लगी क्योंकि हमनें देखा हर एक गाईड अपने हिसाब से अलग-अलग बातें बता रहे थे।वह

मंदिर च्छोटा था, जो कुच्छ लोगों के व्दारा बनवाया गया है।जिसके दिवारो पर लोगों के नाम चुनवाए गए थे जिन्होने भगवान के नाम पर वहा दान तथा बड़ी-बड़ी दक्षिणाए दि थी।हमें मंदिर में ले जाकर बैठाया गया वहा के जो पंडित थे उनहोंने हमारी कुछ जानकारी ली,जैसे हमारे राज्य के बारे में पुछा और बाद में कहा कि यहा जो भी आता है उसकी मनोकामनाएँ पूरी होने के लिए भगवान को दक्षिणा देकर ही जाता है। अगर हम में से किसी को दक्षिणा देनी है तो देने कहा।जब किसी एक ने दक्षिणा दि तो वह उससे पुछने लगा कि कितनी देनी है 500,1000 उसके एकदम से दक्षिणा के आकडे ही मानों बड रहे थे।जो भी 200 कहता उन्हे अपने आप 500 कहता।जिससे यह ज्ञात होता है कि यहा सिर्फ भगवान के नाम पर दक्षिणा कहकर सिर्फ पैंसे हडपने का काम वह लोग कर रहे है।वहा हमें रंग दिया गया जिससे हम जो होली खेलने की आशा में गए थे वह पूरी हुई।देर बहुत हो रही थी तो हम वहा से रिक्शा में हमारे बस के पास जाने निकले,चलती रिक्शा में बैठे किसी ने गाडी से हमारे उपर रंग उडाए। हमारी बस के पहुंचने पर हम सभी बस में बैठे और वास होटल आए।होटल हम बहुत देर से पहुंचे तो ओर कही न जाकर सीधे रुम में जाकर सो गए।एक तो सभी दिन बर का सफर कर के थके हुए थे और उपर से सुबह जल्दी उठकर हमारे अन्य बचे हुए स्थानों पर भी जाना था।

<u>अग्रसेन की बावली</u>

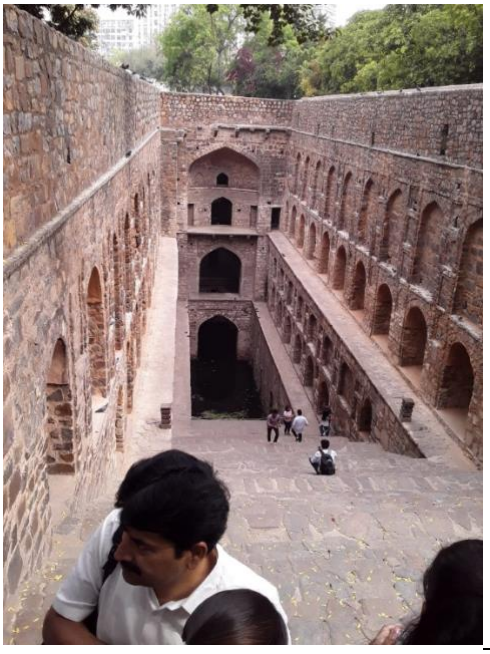

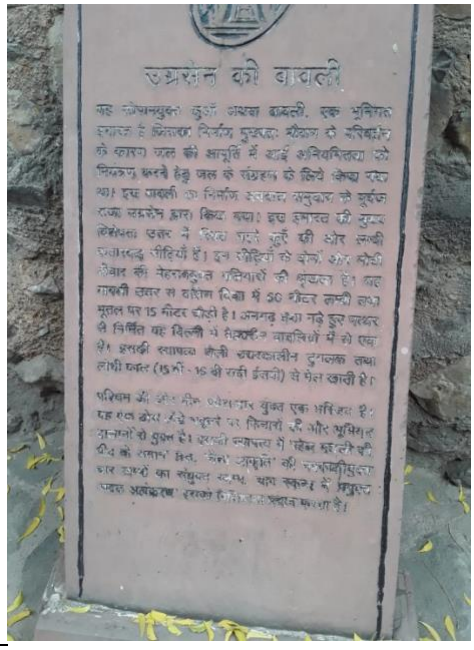

24 तारीख को सुबह जल्दी उठकर फ्रैश होकर अग्रसेन की बावली के दर्शन के लिए निकले।यह भारत की राजधानी दिल्ली में 'जंतर मंतर' के निकट स्थित है, जो भारत सरकार द्वारा 'भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण' (एएसआई) और अवशेष अधिनियम 1958 के अतंर्गत संरक्षित है।महाभारत के पौराणिक पात्र एवं सूर्यवंशी राजा अग्रसेन ने इसका निर्माण करवाया था। यह बावली अभी भी बेहतर स्थिति में है। इस बावली का निर्माण लाल बलुए पत्थर से हुआ है।अनगढ़ तथा गढ़े हुए पत्थर से निर्मित यह दिल्ली की बेहतरीन बावलियों में से एक मानी जाती है।जाने से पहले हम रास्ते में ही सुबह का नाश्ता करगे गए।अग्रसेन की बावली पहुंचने पर सभी बस से उतरे और दो मिनट चलके गए।यह एक सुदंर ऐतिहासिक स्थान था।यह बावली चारों तरफ़ से मकानों से घिरी है, जिससे किसी बाहरी व्यक्ति को पता भी नहीं चलेगा कि यहाँ कोई बावली है।अग्रसेन की बावली 60 मीटर लम्बी और 15 मीटर चौड़ी है। इसमें 103 सीढ़ियाँ है।बावली की स्थापत्य शैली उत्तरकालीन तुग़लक़ तथा लोदी काल (13वी-16वी ईस्वी) से मेल खाती है।लाल बलुए पत्थर से बनी इस बावली की वास्तु संबंधी विशेषताएँ तुग़लक़ और लोदी काल की तरफ़ संकेत करते हैं,लेकिन परंपरा के अनुसार इसे अग्रहरि एवं अग्रवाल समाज के पूर्वज अग्रसेन ने बनवाया था ऐसा माना जाता है।इमारत की मुख्य विशेषता है कि यह उत्तर से दक्षिण दिशा में 60 मीटर लम्बी तथा भूतल पर 15 मीटर चौड़ी है। पश्चिम की ओर तीन प्रवेश द्वार युक्त एक मस्जिद है। यह एक ठोस ऊँचे चबूतरे पर किनारों की भूमिगत दालानों से युक्त है। इसके स्थापत्य में 'व्हेल मछली की पीठ के समान'छत,'चैत्य आकृति' की नक़्क़ाशी युक्त चार खम्बों का संयुक्त स्तम्भ, चाप स्कन्ध में प्रयुक्त पदक अलंकरण इसको विशिष्टता प्रदान करता है।यहा हम सीढियों से निचे गए।जहा सीढियां खत्म हो रही थी वहा पानी था। वहा हमने थोड़ा समय ही बिताया और तस्वीरें खिंची तथा खिचवायी और वहा से हमारे उस दिनचरिए के दुसरे स्थान के दर्शन के लिए निकले।

राजघाट

राजघाट पहुंचने पर हम बस से उतरे और राजघाट के भीतर जाने निकले।वहा चारों ओर पेड-पौधे तथा सुंदर-सुंदर फूलों से भाग सजायी हुई थी। चारों ओर से हवा चल रही थी जैसे मानों हम समुद्र के तट पर ही है।वहा का वातावरण बहुत ही प्रसंन तथा थंड था, ए तो सिर्फ बहार की जलक थी।राजघाट के भीतर घूमने के लिए हमारी जाच कियी गयी और हमें भीतर भेजा गया।अंदर भारत के राष्ट्रपिता माने जाने वाले मोहनदास करमचंद गांधी की स्मृति में निर्मित समाधि,राजघाट संगमरमर का एक मंच है, जहां 31 जनवरी,सन् 1948 को महात्मा गांधी का अंतिम संस्कार किया गया था। यमुना नदी के तट पर स्थित,राजघाट साफ-सुथरे उद्यानों से सज्जित है और यहां पेड़ों को बड़े ही सुंदर तरीके से लगाया गया है। इस घाट पर, गांधी जी के अवशेषों का अंतिम संस्कार किया गया था। यह समाधि स्वयं गांधी जी का एक सच्चा प्रतिबिंब है और उनकी सादगी का परिचय देती है।

यहां ईंटों से बना एक चबूतरा है, जहां उनके मृत शरीर को जलाया गया था और यह काले संगमरमर का मंच, संगमरमर के किनारों से घिरा है। गांधीजी के मुख से निकले उनके आखिरी शब्द 'हे राम' उस स्मारक पर अंकित है। पास ही में एक ज्योति जलती रहती है।वहा की सुंदर बनायी रखने वाले विभिन्न तरह के वृक्षों को अनेक गणमान्य लोगों ने लगाया है। महान नेता को श्रद्धांजलि देने से पहले लोगों को अपने जूते निकालने पड़ते हैं।पास ही में दो संग्रहालय हैं,जो गांधीजी को समर्पित हैं। इस स्मारक को 'वाणु जी भूता' द्वारा डिजाइन किया गया है और इस राष्ट्रीय स्मारक के वास्तुशिल्प डिजाइन के लिए उन्हें कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।राजघाट घूमकर हम गांधी दर्शन संग्रहालय गए,जहा गांधीजी की सारी चीजों को रखा गया है।यहा उनकी सभी तस्वीरें रखी गयी है।हम लोग अंदर गए तो वहा एक पुरुष था जिसने हमे गांधीजी के बारे में बताते पूरा संग्रहालय घुमाया। सग्रहालय में गांधी जेल,उनका चर्खा,जीप जिसमे गांधीजी को गोली लगनेपर लेके आए, नान जिससे उनहोंने नमक सत्याग्रह किया अन्य भी गांधीजी के कहीं सारी चीजों को इस संग्रहालय में अच्छे से रखा गया है।जीस गांधीजी के

बारे में हमनें सिर्फ पुस्तकों में पढ़ा था और उनके चीजों की तस्वीरें पुस्तकों में देखी थी उन्ही चीजों को प्रत्यक्ष रुप में देखते हुए बहुत अच्छा लगा।

जामा मस्जिद

राजघाट के उपरांत हम जामा मस्जिद गए। यह मस्जिद बहुआ पत्थर और सफ़ेद संगमरमर से निर्मित है।यह दुनिया की सबसे बड़ी और संभवतया सबसे अधिक भव्य मस्जिद है।यह लाल क़िले के समाने वाली सड़क पर है।पुरानी दिल्ली की यह विशाल मस्जिद मुग़ल शासक शाहजहां के उत्कृष्ट वास्तुकलात्मक सौंदर्य बोध का नमूना है। इस मस्जिद का माप 65 मीटर लम्बा और 35 मीटर चौड़ा है,तथा आंगन में

100 वर्ग मीटर का स्थान है। 1656 में निर्मित यह मुग़ल धार्मिक श्रद्धा का एक विशिष्ट पुन: स्मारक है। इसके विशाल आंगन में हजारों भक्त एक साथ आकर प्रार्थना करते हैं। जामा मस्जिद लाल क़िले से 500 मीटर की दूरी पर स्थित है।इसे मस्जिद - ए - जहानुमा भी कहते हैं, जिसका अर्थ है विश्व पर विजय दृष्टिकोण वाली मस्जिद। इसे बादशाह शाहजहां ने एक प्रधान मस्जिद के रूप में बनवाया था। एक सुंदर झरोखेनुमा दीवार इसे मुख्य सड़क से अलग करती है। पुरानी दिल्ली के प्राचीन कस्बे में स्थित यह स्मारक 5000 शिल्पकारों द्वारा बनाया गया है। यह भव्य संरचना भौ झाला पर टिकी है जो शाहजहांना बाद में मुग़ल राजधानी की दो पहाड़ियों में से एक है। इसके पूर्व में यह स्मारक लाल क़िले की ओर स्थित है और इसके चार प्रवेश द्वार हैं, चार स्तंभ और दो मीनारें हैं।मस्जिद का निर्माण लाल सैंड स्टोन और सफेद संगमरमर की समानांतर खड़ी पट्टियों पर किया गया है। सफेद संगमरमर के बने तीन गुम्बदों में काले रंग की पट्टियों के साथ शिल्पकारी की गई है।यह पूरी संरचना एक ऊंचे स्थान पर है ताकि इसका भव्य प्रवेश द्वार आस पास के सभी इलाक़ों से दिखाई दे सके। सीढियों की चौड़ाई उत्तर और दक्षिण में काफ़ी अधिक है। चौड़ी सीढियां और मेहराबदार प्रवेश द्वार इस लोकप्रिय मस्जिद की विशेषताएं हैं।मुख्य पूर्वी प्रवेश द्वार संभवतया बादशाहों द्वारा उपयोग किया जाता था जो सप्ताह के दिनों में बंद रहता था।इसमें वास्तुकला शैली के अंदर हिन्दू और मुस्लिम दोनों ही तत्वों का समावेश है।हमनें यहा कुछ चीजें देखी जैसे मस्जिद की सीढियां चढने के उपरांत जब हमने मस्जिद में प्रवेश किया तो वहा मस्जिद के सामने नेविगेशन कम्पास की तरह एक यत्र था, जिसके बारे में हमारे साथ जो एक सहपाठी थी वह जानतीं थी,तो उसने हमें इसकी जानकारी दी।वहा कुछ समय दर्शन करने के उपरांत हम लाल किल्ले के को देखने के लिए निकले।

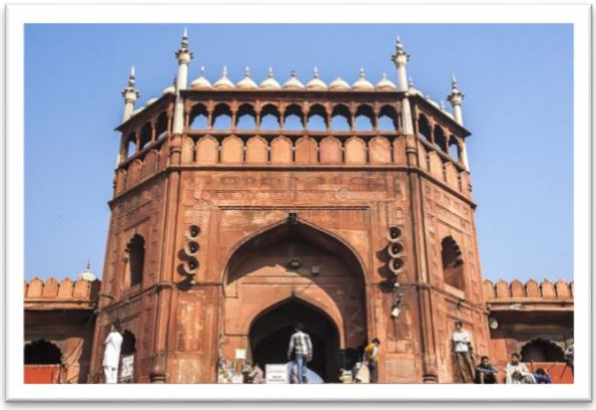

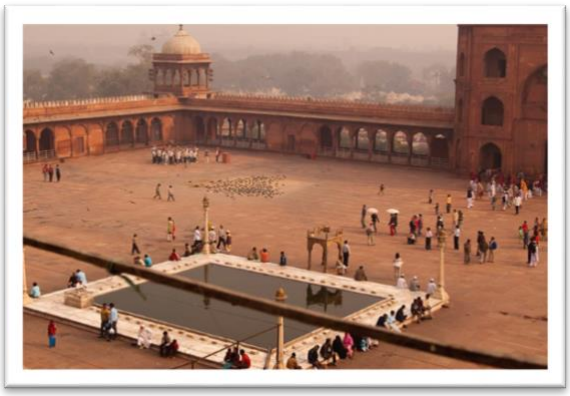

लाल किला

लाल किले जाते वक्त सारी जगह भीड़ ही भीड़ थी।सबसे ज्यादा भीड़ यहा थी तो हम एक दूसरे का हाथ पकडे गए।दिल्ली का लाल किला न केवल वास्तुकला का एक अभूतपूर्व नमूना है बल्कि भारतीय इतिहास की कुछ सबसे अहम घटनाओं का भी गवाह है। इस भव्य ईमारत को किला-ए-मुबारक जैसे कई अन्य नामों से भी जाना जाता है।लाल किला 1648 में पांचवें मुगल सम्राट शाहजहाँ द्वारा बनवाया गया है।256 एकड़ में फैला दिल्ली का लाल किला परिसर में बगले का पुराना किला सलीमगढ़ भी शामिल है, जिसे इस्लाम शाह सूरी ने 1546 में बनवाया था। इस विशाल दीवार वाली संरचना को पूरा होने में लगभग 10 साल का समय लगा। शाहजहाँ के दरबार के उस्ताद हामिद और उस्ताद अहमद ने 1638 में इसका निर्माण शुरू किया और 1648 में इसको पूरा किया।यमुना नदी के तट पर निर्मित, जिसका पानी किले के चारों ओर की खाई में जाता था,अष्टकोणीय आकार का लाल किला अंग्रेजों के सत्ता में आने से पहले लगभग 200 वर्षों तक मुगल साम्राज्य की गद्दी बना रहा था।

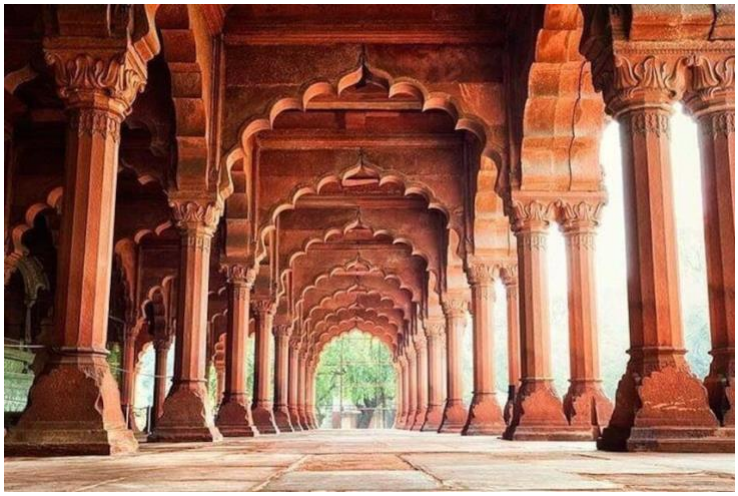

यह किला मुगल वास्तुकला की प्रतिभा को दर्शाता है, जो विभिन्न स्थानीय निर्माण की परंपराओं जैसे फारसी और हिंदू वास्तुकला के साथ मिश्रित है। लाल किले ने इसके बाद बने दिल्ली, राजस्थान और उत्तर प्रदेश के प्रमुख स्मारकों की वास्तुकला को प्रभावित किया है।

भारत के प्रधानमंत्री हर वर्ष स्वतंत्रता दिवस पर लाल किले पर राष्ट्रीय झंडा फहराते हैं। 15 अगस्त 1947 को भारत को अंग्रेजों से आजादी मिलने के बाद से यह परंपरा चल रही है।

लाल किला का असली नाम किला-ए-मुबारक था। अंग्रेजों ने इसकी विशाल लाल बलुआ पत्थर की दीवारों के कारण इसका नाम रेड फोर्ट रख दिया और स्थानीय लोगों ने उसका अनुवाद लाल किला किया।यहा हमने नीचे से ही लाल किल्ले का दर्शन लिया क्योंकि हमारे पास समय बहुत कम था और सारे सरोजनी मार्केट में जाने की आशा में रूके थे जहा घुमने के लिए हमें समय बहुत चाहिए था,जिसके कारण हमने लाल किल्ले पर ज्यादा समय नहीं बिताया।

सरोजनी नगर मार्केट

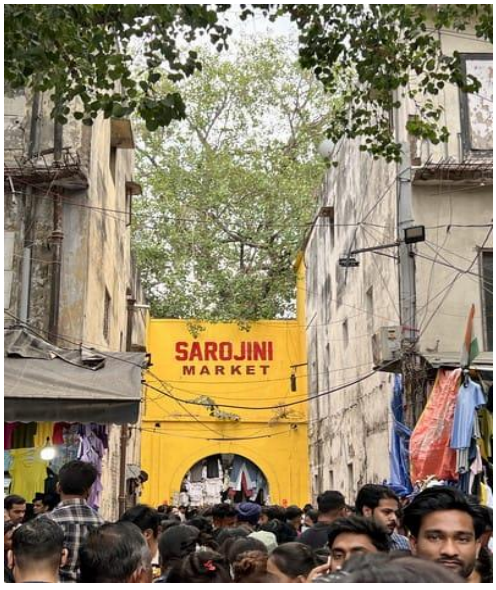

लाल किले से हम सरोजनी मार्केट निकले,वहा पहुंचने पर सभी बस से उतरे और मार्केट जाने निकले।यह मार्केट का नाम देश की जानी-मानी महिला स्वतंत्र सेनानी सरोजिनी नायडू के नाम पर रखा गया है। इसी वजह से यह मार्केट महिलाओं के शॉपिंग के लिए खास माना जाता है। यह लड़कियों के लिए शॉपिंग का बहुत बड़ा हब सेंटर है।इतना ही नहीं ये कॉलेज स्टूडेंट से लेकर और महिलाओं का भी फेवरेट शॉपिंग डेस्टिनेशन है। इस मार्केट की खास बात यह है कि फैशन ब्रांड के महंगे कपड़े बहुत कम दामों में मिल जाते हैं।इस मार्केट में आपको कपड़े, बर्तन, क्रॉकरी इत्यादि सामान बड़ी आसानी से मिलता है। यहां हमेशा ही भीड-भाड़ होती है।यह मार्केट खाने-पीने के व्यंजनों के लिए भी काफी प्रसिद्ध है।

सरोजनी नगर मार्केट के अंदर जाने से पूव हमें हमारे प्राध्यापक तथा प्राध्यापिका ने यहा की जानकारी दी।कि किस प्रकार यहा घूमना है। हमें अपने मोबाईल,पैंसे तथा किमती सामान को सुरक्षित रुप से रखने के लिए कहा क्योंकि यहा एक तो भीड़ बहुत होती है और भी।एक बार चौरी किया हुआ सामान वापस मिलने की बात छोड ही दो वह ढूँढने भी नहीं जा सकते। मार्केट बहुत बडा है तो यहा पूरा दल एक साथ घूमना मुमकिन नही था और सब खरिदारी करने के गडबडी में एक साथ का हाथ छोड़कर जाना साहजीक है। जिसके कारण हम सभी को कुछ लोगों के दल बनाकर घुमने के लिए कहा। हम सभी मार्केट के अंदर गए।चारों ओर सामान ही सामान था।

यह लड़कियों के लिए शॉपिंग का बहुत बड़ा हब सेंटर है।इतना ही नहीं,कॉलेज स्टूडेंट से लेकर और महिलाओं का भी फेवरेट शॉपिंग डेस्टिनेशन है। इस मार्केट की खास बात यह है कि फैशन ब्रांड के महंगे कपड़े बहुत कम दामों में मिल जाते हैं। इस मार्केट में कपड़े, बर्तन, क्रॉकरी इत्यादि सामान बड़ी आसानी से मिलता है। यहां हमेशा ही भीड-भाड़ होती है। यह मार्केट खाने-पीने के व्यंजनों के लिए भी काफी प्रसिद्ध है। यहा हम सभी ने बहुत सारी शोपिंग की और रात होने के कारण मार्केट से बहार आकर रुके क्योंकि हमे अपनी-अपनी खरीददारी होने के बाद बाहर आकर रुकने के लिए कहा था,तो हम अपनी शिपिंग होने के बाद बहार आकर हमारे अन्य साथियों के लिए रुके।सभी आने पर,अध्यापक ने हमारी गिनती की और गिनती सही मिलने पर हम बस में बैठे और होटल के लिए रवाना हुए क्योंकि अगले दिन हमें वापस गोवा आने के लिए सुबह 4:45 की दिल्ली से तिरुवनंतपुरम सेंट्रल ट्रेन थी,जिसके कारण हमें होटल जल्दी पहुचकर

हमारा सभी सामान भी पेक करना था।होटल पहुचने के बाद हम सभी फ्रैश होकर अपना सामान पेक करने बैठे और पूरा पेक करने के उपरांत सोने गए।दुसरे दिन जल्दी उठकर गोवा वापस आने की सोच में हमें निंद ही नहीं आ रही थी और सुबह देरी से कब आॅख लगी पता ही नहीं चला।हमे सुबह जल्दी निकना था पर हमारे रुम के हम चारों सोकर रह गए और किसी अन्य रूप के मित्र के फोन करने पर जाग गए तो गडबडी में जैसे थे वैसे ही सामान लेकर रुम से बहार निकले।मन में डर था कयोंकि हमें डांट तो पढने वाली ही थी क्योंकि सारे निचे पहुंच गए थे सिवा हम चारों के और काफी समय से वह हमारी राह देख रहे थे।इसके बाद हम अपना सामान गाडी में डालकर गाडी में बैठे और मेट्रो से रेल्वे स्टेशन निकले। वहा जाँच के लिए सभी का सामान जाँच मशीन में डाला गया और गडबडी में हम में से किसी एक का बॅग वहा छूट गया जिसे ट्रेन में आने पर पता चला,तो उसका बॅग ढूँढने के लिए दो हमारे ही सहपाठी गए पर उने कोई भी बॅग वहा नहीं मिला तो वे वापस चले आए।कुछ समय के बाद हम फिरसे गए और ट्रेन छूटने में सिर्फ 10-15 मिनट थे तो बभागकर गए,तो वहा दो मुस्लमान पुरूष उनके पास गलती से बॅग जाने पर उने अपना बॅग नहीं है यह पता चलने पर वह वे बॅग लेकर वहा आकर कोई आएगा इस प्रतिक्षा में रुके थे।हमें वह जट से हमारे पास आए और वह बॅग देकर चले गए और हम भी बॅग मिलने पर जल्द से उनका शुक्रिया कर ट्रेन में आए और उस लडकी का बॅग उसके पास दिया।दिल्ली से ट्रेन छुटी और हम सुबह 26 तारीख को वापस गोवा पहुंचे।मडगाव स्टेशन पर पहुंचने पर सभी अपने- अपने बॅग लिए ट्रेन से बहार निकले,किसी को उनकें माँ-पिताजी लेने आए थे तो किसी को भाई-बहन।सभी अपने-अपने घर सफलतापूर्वक पहुंचे।

निष्कर्ष

हमने इस शैक्षणिक यात्रा के अंतर्गत कुल सात दिनों की यात्रा की।हमने दिल्ली के अनेक ऐतिहासिक तथा विश्वविद्यालयों में भेट दियी।जैसे मंदिर,मस्जिद,किले, विश्वविद्यालय,आदि।इस यात्रा के दौरान हम बहुत कुछ सिखे तथा नयी जानकारियाँ प्राप्त की जिससे हम अवगत थे।आपस में एक साथ कैसे रहना है यह सब हम इस यात्रा के दौरान सिखे।

मेरा यह सफर काफी यादगार और रोमांचक रहा हमने इस टूर के दौरान खुप मज़े किये।नयी जगहाए देखी जिनको हमने बस मोबाईल या फिर टि.वि पर फिल्मों में देखा था।दिल्ली शहर में रहे प्रदूषण के बारे में सिर्फ सूना था पर वहा जाकर देखा कि कितनी गंदगी है।

अंत हम सभी ठीक से सरलतापूर्वक अपने-अपने घर पहुंचे।हमाने इस यात्रा के दौरान बहुत कुछ नयी बातें सिखी तथा देखी जिने हम कभी भी नहीं भूल सकते। यह यात्रा हमारे लिए एक यादगार यात्रा है,जो कभी भुलाएँ भूल न पाएंगे।

धन्यवाद!